जमीन की रोदन

हमारा प्रकृति को कितना सौन्दर्य है
हमारा मिट्टी कितना आहलादकारी है।
जब बारिश बरसते समय
मिट्टी को खूबसूरत कितना अच्छी है।

लेकिन इस आधुनिक युग में
मिट्टी को दिल से, मानव लोग
चोट पहुँचाता हुआ,
हम ध्यान देती मिट्टी हमारा माँ जैसी है।

माँ हमको कई तकलीफ सहते से
खामोश से पीडाओं में जीता है
लेकिन माँ को सहारा केलिए
हमको प्रत्युपकार नही करना चाहिए।

इस जब मानव लोगों को
मिट्टी जैसी माँ को ध्यान नही चाहते
एक पल की सुकून को
सारे जिंदगी नष्ट हो जाते हैं।

माँ जैसे मिट्टी सदा पुकार की
इस प्रकृति हमारेलिए
इस मिट्टी हमारेलिए
फिर हम क्यों उसको मन से चोट दिया ?

इस दुनिया में हम बीता है
इस मिट्टी में हम खेलते हैं
फिर क्यों वहाँ उसको नहीं ध्यान देता ?
क्यों वहाँ उसको नष्ट कराना तैयार करना ?

कुछ देर को सुकून केलिए
मानव लोग पेड़ काटते हैं।
नदियाँ बुरा जल लाती हैं
और हमारे जीवन में विनाश होगा है।

प्रकृति का खुश हमारा खुश है
उसको हार हमारा हार है
नए लोग की हालत देखकर
प्रकृति दुःख हो जाएगी।

अब धुएँ में घुलते अरमान
वह छीने हर पहचान
माँ को आँखों में आँसू भरत से
और पिता का सपना बिखरते हुए।

मिट्टी को दर्द हुए मानव
कल तो उम्मीदों के सितारे
आज भटकते हुए, युवा उठो
हाथ बढाओ, हम सब एक हैं।

कई साल पहले,
प्रकृति हमको अकार करती है
लेकिन हमारा प्रवर्तन को दिखानेवाले
मिट्टी हमारेलिए गुस्से होता है।

आजकल बारिश शक्त हो जाता
प्रकृति प्रकोपों बढ़ जाता से है
हमको वापस लौटाना तो
हमारा बुरा प्रवर्तन का फल।

मिट्टी की रोदन से पुकार
मेरा कानों से आती हैं,
वे कहते से है हमारेलिका
मैं उसका माँ जैसी हैं।

प्रकृति का पुकार इससेलिका
मेरा बचाऊँ, मेरा बचाऊँ
मेरा पुराना खुशी वापस मिलूगा
हम सहेली के साथ रहता हैं।

बच्चों की हँसी गूजे गगन से, मिट्टी में
फूल खिले हर एक चमक में,
तितलीयां नाचे है, और पवन गुनगुनाका
प्रकृति एक उत्सव का प्रतीक हो जाएगा।

है ईश्वर, मेरी माँ जैसे मिट्टी को
कई साल जीते को मेरा प्रार्थना करें
मुझे कृपा कीजिका, मुझे खुश कीजिका
ज़मीन को प्यार करना का अवसर दीजिका।

इस सुन्दर मिट्टी में
कई किसानों सोना उपजाता
मेहनत के साथ जीवन बढाओ
मिट्टी, हमारी प्रकृति सदा उपकार करती है।

मेरी चाहते है, चाहते किया तो
उसके गोद में सो जाने को
कदम-कदम को बढ जाने को
मेरी मिट्टी माँ को प्यार करता हैं।